विद्या ददाति विनयम्

संजीव®

सरसा पाठशाला

RPSC 1st ग्रेड हिंदी

9

हल प्रश्न पत्र

व्याख्या सहित

5वाँ संस्करण

राजस्थान लोक सेवा आयोग अजमेर द्वारा जारी नवीनतम उत्तरमाला के आधार पर
स्कूल व्याख्याता (प्रथम श्रेणी शिक्षक) हिंदी के 9 हल प्रश्न पत्र

लेखक

कैलाश नागौरी
(सरसा पाठशाला ऐप)
वॉट्सऐप- 9660669988

संपादक

डॉ. दीपेश कुमार सैनी

संजीव प्रकाशन, जयपुर

- **प्रकाशक :**
  संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,
  जयपुर-03
  website : www.sanjivprakashan.com

- © **किरण** (सरसा पब्लिकेशन)

- **संस्करण**- 2026 (5वाँ)
- **मूल्य : ₹220**
- **लेजर कम्पोजिंग :**
  संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर
- **मुद्रक :** मनोहर आर्ट प्रिन्टर्स, जयपुर

- ❑ इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं-
  Email : sanjeevcompetition@gmail.com
  पता : प्रकाशन विभाग, संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर
  आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।
- ❑ इस पुस्तक के किसी भी अंश का पुनरुत्पादन या किसी प्रणाली के सहारे पुनर्प्राप्ति का प्रयास अथवा किसी भी तकनीक या तरीके-इलेक्ट्रोनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या वेब माध्यम से प्रकाशक की अनुमति के बिना प्रकाशन या वितरण नहीं किया जा सकता है।
- ❑ हमने अपने प्रयास से इस पुस्तक के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्रोतों से प्राप्त किया है। इस पुस्तक में प्रकाशित किसी भी सूचना की सत्यता या त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।
- ❑ सभी प्रकार के प्रतिवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

अनुक्रमणिका

क्र.स.	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	स्कूल व्याख्याता 'हिंदी'-2025 (माध्यमिक शिक्षा)	05
2.	स्कूल व्याख्याता 'हिंदी'-2024 (संस्कृत शिक्षा)	22
3.	स्कूल व्याख्याता 'हिंदी'-2022 (माध्यमिक शिक्षा)	40
4.	स्कूल व्याख्याता 'हिंदी'- 2022 (संस्कृत शिक्षा)	56
5.	स्कूल व्याख्याता 'हिंदी'- 2018 (माध्यमिक शिक्षा)	71
6.	स्कूल व्याख्याता 'हिंदी'- 2018 (संस्कृत शिक्षा)	92
7.	स्कूल व्याख्याता 'हिंदी'-2015 (माध्यमिक शिक्षा)	112
8.	स्कूल व्याख्याता 'हिंदी'-2013 (माध्यमिक शिक्षा)	128
9.	स्कूल व्याख्याता 'हिंदी'- 2011 (माध्यमिक शिक्षा)	142

स्कूल व्याख्याता एवं वरिष्ठ अध्यापक हिंदी के लिए
संजीव व सरसा पाठशाला की अति महत्त्वपूर्ण पुस्तकें

- सारिका–प्रथम श्रेणी शिक्षक भर्ती परीक्षा हेतु
- चित्रा–द्वितीय श्रेणी शिक्षक भर्ती परीक्षा हेतु
- सरसा काव्यशास्त्र–प्रथम श्रेणी शिक्षक भर्ती परीक्षा हेतु
- रूचिरा काव्यशास्त्र–द्वितीय श्रेणी शिक्षक भर्ती परीक्षा हेतु
- कविमाला वस्तुनिष्ठ
- हिंदी साहित्य का सरल एवं सुबोध इतिहास
- साहित्य मंजरी- हिंदी साहित्य एक्जाम रिव्यू
- आरपीएससी-32 हिंदी सॉल्वड पेपर्स 2010 से 2025
- सामान्य हिंदी व्याकरण

''पाँचवें संस्करण की भूमिका''

संजीव प्रकाशन से प्रकाशित इस पुस्तक का प्रथम संस्करण खूब प्रशंसनीय रहा है। संजीव प्रकाशन एवं सरसा पाठशाला से अब तक लगातार चार प्रकाशित संस्करण प्रशंसनीय रहे हैं। यह इस पुस्तक का पाँचवाँ पूर्णतया संशोधित एवं संवर्द्धित संस्करण हैं। राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा स्कूल व्याख्याता हिंदी शिक्षक भर्ती परीक्षा के लिए अब तक जितने भी ज्ञात पेपर हुए हैं, उन सभी पेपर्स का एक जगह संकलन वाकई में खूब चर्चित है। किसी ने सच ही कहा है कि मुख्य परीक्षा में बैठने से पहले उस परीक्षा के पूर्व के पेपर्स का अवलोकन करने से मुख्य परीक्षा का पैमाना परखा जा सकता है कि परीक्षा का स्तर एवं प्रश्नों की शैली किस प्रकार की रहने वाली है। विद्यार्थियों के हित में इस नवीनतम संस्करण में राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित प्रथम श्रेणी शिक्षक परीक्षा के लिए हिंदी विषय के सभी **9 प्रश्न पत्र** वर्ष 2010 से 2025 तक के शामिल किए गए हैं। प्रत्येक प्रश्न पत्र के उत्तर RPSC की उत्तरमाला के आधार पर लगाए गए हैं। फिर भी RPSC द्वारा जारी उत्तरमाला से मिलान अवश्य कर लेवें, क्योंकि संशोधित परिणाम में उत्तरमाला भिन्न भी हो सकती है। अधिकांश प्रश्नों की सरल भाषा में व्याख्या की गई है। पुस्तक लेखन एवं टाईपिंग के लिए पूर्णतया सावधानी बरती गई है, फिर भी मानवीय स्वभाववश कहीं त्रुटि होना स्वाभाविक है, इसलिए किसी भी प्रकार की त्रुटि के लिए लेखक एवं प्रकाशक जिम्मेदार नहीं है। हमारा आपसे निवेदन है कि यदि पुस्तक में कहीं त्रुटि पायी जाती है तो इसे अनदेखा नहीं करें। आप हमें वाट्सऐप नंबर 9660669988 पर मैसेज करके चर्चा अवश्य करें। हमें आपके सुझाव अवश्य ही और बेहतर करने के लिए प्रेरित करेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मैं पिछली बार की तरह इस बार भी आपके सुझावों से वंचित नहीं रहूँगा।

धन्यवाद!

✍ कैलाश नागौरी

(सरसा पाठशाला)

नई बुक्स की जानकारी, अपडेट, बुक खरीदने व टेस्ट सीरीज के लिए सरसा पाठशाला ऐप डाउनलोड करें।

पेपर 1 | स्कूल व्याख्याता हिंदी'-2025 (माध्यमिक शिक्षा)

(परीक्षा दिनांक : 23 जून 2025)

1. नन्ददास की रचना है–

(अ) वाग्विलास छटा (ब) कल्पतरु

(स) नंदलाल छटा (द) रसमंजरी

व्याख्या-(द) रसमंजरी नंददास जी की रचना है।

2. प्रयोगवाद को स्पष्ट करते हुए अज्ञेय की उक्ति - ''प्रयोग का कोई वाद नहीं है..... प्रयोग अपने आप में इष्ट नहीं है, वह साधन है और दोहरा साधन है। क्योंकि एक तो वह उस सत्य को जानने का साधन है, जिसे कवि प्रेषित करता है, दूसरे वह उस प्रेषण की क्रिया को और उसके साधनों को जानने का भी साधन है।'' किस संग्रह की भूमिका में लिखी गई है?

(अ) दूसरा सप्तक (ब) तार सप्तक

(स) तीसरा सप्तक (द) चौथा सप्तक

व्याख्या-(अ) प्रयोगवाद को स्पष्ट करते हुए उक्त कथन अज्ञेय ने दूसरे सप्तक की भूमिका में लिखा था।

3. शक्ति (प्रतिभा), निपुणता एवं अभ्यास तीनों को सम्मिलित रूप से काव्य हेतु मानने वाले आचार्य हैं–

(अ) राजशेखर (ब) जयदेव

(स) मम्मट (द) पंडितराज जगन्नाथ

व्याख्या-(स) शक्ति (प्रतिभा), निपुणता और अभ्यास तीनों को सम्मिलित रूप से काव्य हेतु मानने वाले आचार्य मम्मट हैं।

4. अधिसूचना के संबंध में असंगत है-

(अ) सांविधिक नियमों और आदेशों की सूचना अधिसूचना के रूप में दी जाती है।

(ब) सभी कर्मचारियों की नियुक्ति, पदोन्नति, स्थानांतरण आदि सूचना अधिसूचना के रूप में प्रकाशित की जाती है।

(स) अधिसूचना का प्रकाशन अनिवार्यत: राजपत्र में जाता है।

(द) शक्तियों के सौंपे जाने की घोषणा अधिसूचना के रूप में प्रकाशित की जाती है। (ब)

5. ''बावन तोले पाव रत्ती'' लोकोक्ति का अर्थ है–

(अ) बहुत किफायत से खर्च करना।

(ब) जो हर तरफ से बिल्कुल ठीक हो।

(स) एक काम के घाटे का दूसरे काम से पूरा होना।

(द) जब काम के आरम्भ में ही विघ्न पड़ जाए।

व्याख्या-(ब) जो हर तरफ से बिल्कुल ठीक हो, अर्थ के लिए सही लोकोक्ति है-बावन तोले पाव रत्ती।

6. पश्चिमी हिंदी उपभाषा के अंतर्गत निम्न में से कौनसी बोली सम्मिलित नहीं है?

(अ) बुंदेली (ब) बघेली

(स) कन्नौजी (द) कौरवी

व्याख्या-(ब) पश्चिमी हिंदी उपभाषा के अंतर्गत बघेली बोली शामिल नहीं है। बघेली बोली पूर्वी हिंदी उपभाषा की बोली है।

7. ''इनकी सी विशुद्ध, सरस और शक्तिशालिनी ब्रजभाषा लिखने में और कोई कवि समर्थ नहीं हुआ। विशुद्धता के साथ प्रौढ़ता और माधुर्य भी अपूर्व ही है। विप्रलम्भ शृंगार ही अधिकतर इन्होंने लिखा है।'' घनानन्द के बारे में यह कथन किसका है?

(अ) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

(ब) रामचंद्र शुक्ल

(स) नगेन्द्र

(द) रामस्वरूप चतुर्वेदी

व्याख्या-(ब) घनानंद के बारे में उक्त कथन आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है।

8. पं. युगल किशोर शुक्ल द्वारा प्रकाशित हिन्दी का पहला पत्र है-

(अ) उदन्त मार्तण्ड (ब) बनारस अखबार

(स) बंगदूत (द) समाचार सुधावर्षण

व्याख्या-(अ) पं. युगल किशोर शुक्ल द्वारा प्रकाशित हिंदी का पहला समाचार पत्र उदंत मार्तण्ड हैं। इसका प्रकाशन कलकत्ता से 30 मई 1826 को प्रारम्भ हुआ। यह साप्ताहिक पत्रिका थी।

9. निम्नलिखित में से किस ग्रंथ को आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने मम्मट के काव्यप्रकाश का छायानुवाद कहा है?

(अ) काव्य विवेक (ब) काव्य निर्णय
(स) रस रहस्य (द) वृत्त विचार

व्याख्या-(स) कुलपति मिश्र ने मम्मट के काव्य प्रकाश, विश्वनाथ के साहित्य दर्पण केशव की रसिक प्रिया के आधार पर काव्यांग विवेचन का प्रसिद्ध ग्रंथ ''रस रहस्य'' (1670 ई.) लिखा।

10. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने मीराबाई की उपासना किस ढंग की मानी है?

(अ) दास्य भाव (ब) वत्सल भाव
(स) माधुर्य भाव (द) सख्य भाव

व्याख्या-(स) आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने मीराबाई की उपासना माधुर्य भाव की मानी है।

11. हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित 'शिरीष के फूल' शीर्षक निबंध के संबंध में कौनसा कथन सही नहीं है?

(अ) शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता का मंत्र-प्रचार करता रहता है।
(ब) शिरीष वसंत के आगमन के साथ लहक उठता है, आषाढ़ तक तो मस्त रहता है।
(स) शिरीष के साथ आरग्वध (अमलतास) की तुलना की जा सकती है।
(द) शिरीष का फूल संस्कृत-साहित्य में बहुत कोमल माना गया है। (स)

12. गीतिका छंद के विषय में असंगत है -

(अ) यह मात्रिक सम छंद है।
(ब) प्रत्येक चरण के अंत में लघु-गुरु होता है।
(स) प्रत्येक चरण में 26 मात्राएँ होती हैं।
(द) 12, 14 पर यति होती है।

व्याख्या-(द) गीतिका छंद के प्रत्येक चरण में 26 मात्राएँ होती है और 14 व 12 मात्रा के बाद यति होती है। इसमें चरण के अंत में लघु-गुरु (।ऽ) आना आवश्यक है।

13. आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र किस कवि को रीतिबद्ध श्रेणी में शामिल नहीं करते हैं?

(अ) भिखारीदास (ब) जसवंत सिंह
(स) कवि ग्वाल (द) द्विजदेव

व्याख्या-(द) आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र द्विजदेव को रीतिसिद्ध कवियों की श्रेणी में शामिल करते हैं।

14. इनमें से किस आचार्य ने साधारणीकरण का विवेचन नहीं किया है?

(अ) विश्वनाथ (ब) शंकुक
(स) भट्टनायक (द) अभिनवगुप्त

व्याख्या-(ब) आचार्य शंकुक ने साधारणीकरण का विवेचन नहीं किया है। हालांकि उन्होंने भरतमुनि के रससूत्र के निष्पत्ति शब्द की व्याख्या अवश्य ही की है।

15. जानि स्याम को स्याम घन नाचि उठे वन मोर। प्रस्तुत पंक्ति में अलंकार है -

(अ) संदेह (ब) उदाहरण
(स) श्लेष (द) भ्रांतिमान

व्याख्या-(द) उक्त पंक्ति में भ्रांतिमान अलंकार है। श्रीकृष्ण को देखकर मोर को बादल का भ्रम हो गया, इसलिए वह नाचने लगा है।

16. पृथ्वीराज रासो के संदर्भ में असंगत है-

(अ) वस्तुवर्णन का आधिक्य
(ब) अलंकारों का सहज प्रयोग
(स) वीर और शृंगार रस की प्रधानता
(द) डिंगल शैली

व्याख्या-(द) पृथ्वीराज रासो की शैली पिंगल शैली मानी जाती है।

17. हिन्दी कहानी-आन्दोलन और उसके प्रणेता के संदर्भ में असंगत है?

(अ) अ-कहानी - डॉ. गंगाप्रसाद विमल और अन्य
(ब) समातंर कहानी - कमलेश्वर
(स) सक्रिय कहानी - अमृत राय
(द) सचेतन कहानी - डॉ. महीप सिंह

व्याख्या-(स) सक्रिय कहानी आंदोलन 1979 ई. में राकेश वत्स के द्वारा चलाया गया था। जबकि सहज कहानी आंदोलन 1968 ई. में अमृतराय द्वारा चलाया गया था।

18. जीवनी और उसके लेखक की दृष्टि से कौनसा विकल्प सुमेलित नहीं है?

(अ) मेरे बडे भाई शमशेर जी - विष्णु चंद्र शर्मा
(ब) वट वृक्ष की छाया में - कुमुद नागर
(स) शेष कथा - ज्ञानचंद्र जैन
(द) रांगेय राघव एक अंतरंग परिचय - सुलोचना रांगेय राघव

व्याख्या-(अ) मेरे बड़े भाई शमशेर जी नामक रचना डॉ. तेज बहादुर चौधरी ने लिखी है।

19. ''सिद्धों और योगियों की रचनाएँ तांत्रिक विधान, योग साधना, आत्म निग्रह, श्वास-निरोध, भीतरी चक्रों और नाभि की स्थिति अंतर्मुख साधना के महत्त्व इत्यादि की सांप्रदायिक शिक्षा मात्र हैं, जीवन की स्वाभाविक अनुभूतियों, दशाओं से उनका कोई संबंध नहीं। अतः वे शुद्ध साहित्य के अन्तर्गत नहीं आती।'' आदिकालीन सिद्धों और योगियों के साहित्य के बारे में यह कथन किसका है?

(अ) रामचंद्र शुक्ल (ब) मिश्र बंधु
(स) शिवसिंह सेंगर (द) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

व्याख्या-(अ) आदिकालीन योगियों एवं सिद्धों के बारे में उक्त कथन आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कहा है।

20. सूर के काव्य और भक्ति विषयक कौनसा कथन गलत है?

(अ) सूर के काव्य में सख्य भक्ति के साथ-साथ वात्सल्य भाव का भी वर्णन है।
(ब) सूर की भक्ति का मेरुदण्ड पुष्टिमार्गीय भक्ति है।
(स) भगवत्कृपा की प्राप्ति के लिए सूर की भक्ति पद्धति में अनुग्रह का प्राधान्य है।
(द) सूर के काव्य में दार्शनिक सिद्धांत ''द्वैताद्वैत'' की प्रधानता है।

व्याख्या-(द) सूर के काव्य में दार्शनिक सिद्धांत द्वैताद्वैतवाद की प्रधानता नहीं है। सूरदास जी पुष्टिमार्गी थे। पुष्टिमार्ग का सिद्धांत शुद्धाद्वैतवाद है।

21. ओज गुण के संबंध में असंगत है -

(अ) इसकी अभिव्यक्ति संयुक्त, द्वित्व तथा रेफ युक्त वर्णों द्वारा होती है।
(ब) इस गुण का प्रयोग वीर, वीभत्स तथा रौद्र रस में होता है।
(स) कठोर तथा परुष वर्णों का प्रयोग होता है।
(द) दीर्घ समासों का बहुल प्रयोग नहीं होता है।

व्याख्या-(द) ओज गुण में दीर्घ समासों का बहुल प्रयोग नहीं होता है, यह असंगत कथन है। क्योंकि ओज गुण की सृष्टि के लिए लम्बे-लम्बे सामासिक पदों का प्रयोग किया जाता है।

22. आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने खड़ी बोली को एक साथ आगे बढ़ाने वाले विद्वानों में किसे सम्मिलित नहीं किया है?

(अ) लल्लूलाल (ब) सैयद इंशा अल्ला खाँ
(स) मुंशी सदासुख लाल (द) राजा शिवप्रसाद

व्याख्या-(द) आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने खड़ी बोली को एक साथ आगे बढ़ाने वाले चार विद्वान माने हैं- मुंशी सदासुख लाल, सैयद इंशा अल्ला खाँ, सदल मिश्र और लल्लूलाल। अतः राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद इनमें शामिल नहीं हैं।

23. संविधान के किस अनुच्छेद द्वारा राजभाषा हिन्दी का विकास करना केन्द्र सरकार का कर्त्तव्य माना गया है?

(अ) अनुच्छेद 345 (ब) अनुच्छेद 350
(स) अनुच्छेद 351 (द) अनुच्छेद 344

व्याख्या-(स) अनुच्छेद 351 के अनुसार राजभाषा हिंदी का विकास करना केन्द्र सरकार का कर्त्तव्य माना गया है।

24. कहानी के संबंध में अनुपयुक्त विकल्प है -

(अ) अंग्रेजी में जिसे शॉर्ट स्टोरी कहते हैं वही बंगला में गल्प तथा हिन्दी में कहानी नाम से प्रचलित हुआ है।
(ब) कहानी में कथासूत्र, कथानक, पात्र और देश-काल या परिस्थिति उसके प्रमुख तत्व माने जाते रहे हैं।
(स) भारतवर्ष में कहानी का प्राचीनतम रूप कथा है।
(द) नियमों को ध्यान में रखकर ही अच्छी कहानी लिखी जा सकती है।

व्याख्या-(द) कहानी लिखने के लिए नियमों को ध्यान में रखना आवश्यक नहीं है। हालांकि कहानी के छह तत्व होते हैं, लेकिन तत्वों से कहानी नहीं है, कहानी से तत्व है। कहानी का मूल कथ्य लेखक की आंतरिक भावना होती है।

25. निम्नलिखित में से शुद्ध वाक्य है?

(अ) यह विषय अत्यन्त कठिन है।
(ब) मैं वहाँ एक पुराने मित्र को मिला।
(स) नौकर के हाथ से भेज देना।
(द) उसे रस्सी बाँधकर ले गए

व्याख्या-(अ) यह विषय अत्यन्त कठिन है, शुद्ध वाक्य है। शेष अशुद्ध वाक्यों के शुद्ध रूप-
मैं वहाँ एक पुराने मित्र से मिला।
नौकर के हाथों भेज देना।
उसे रस्सी से बाँधकर ले गए।

निर्देश : प्र.सं. 26-27 के उत्तर निम्नांकित अपठित गद्यांश के आधार पर दें-

सफलता और चरितार्थता में अन्तर है। मनुष्य के मारणास्त्रों के संचयन से, बाह्य उपकरणों के बाहुल्य से उस वस्तु को पा भी सकता है, जिसे उसने बड़े आडम्बर के साथ सफलता नाम दे रखा है। परन्तु मनुष्य की चरितार्थता प्रेम में है, मैत्री में है, त्याग में है, अपने को मंगल के लिये नि:शेष भाव से दे देने में है। नाखूनों का बढ़ना मनुष्य की उस अन्ध सहजात वृत्ति का परिणाम है जो उसके जीवन में सफलता ले आना चाहती है, उसको काट देना उस स्व-निर्धारित आत्म-बन्धन का फल है जो उसे चरितार्थता की ओर ले जाती है।

26. मनुष्य की चरितार्थता किसमें नहीं है?
(अ) सफलता मात्र में (ब) प्रेम मात्र में
(स) त्याग मात्र में (द) मैत्री मात्र में (अ)

27. नाखूनों को काट देना किसका परिणाम है?
(अ) मनुष्य के भीतर की पशुता का
(ब) मनुष्य के उच्छृंखल स्वभाव का
(स) बाह्य उपकरणों के बाहुल्य का
(द) स्व-निर्धारित आत्म-बन्धन का (द)

निर्देश : प्र.सं. 28-29 के उत्तर निम्नांकित अपठित पद्यांश के आधार पर दें-

रक्त से छाने हुए इस राज्य को
वज्र हो कैसे सकूँगा भोग मैं?
आदमी के खून में यह है सना
और है इसमें लहू अभिमन्यु का।
वज्र-सा कुछ टूटकर स्मृति से गिरा,
दब गये कौन्तेय दुर्वह भार से,
दब गयी यह बुद्धि जो अब तक रही
खोजती कुछ तत्त्व रण के भस्म में।

28. प्रस्तुत पद्यांश में निम्नलिखित में से किसकी पीड़ापूर्ण मनोदशा को व्यक्त किया गया है?
(अ) युधिष्ठिर (ब) अश्वत्थामा
(स) विदुर (द) भीष्म (अ)

29. वज्र-सा कुछ टूटकर स्मृति से गिरा। पंक्ति में स्मृति से संकेतित है-
(अ) आकाश (ब) बादल
(स) राज्य (द) बिजली (अ)

30. आचार्य शंकुक ने रस सूत्र की व्याख्या में संयोगात् का अर्थ माना है?
(अ) उत्पाद्य - उत्पादक माद
(ब) अनुमाप्य - अनुमापक भाव
(स) व्यंग्य - व्यंजक संबंध
(द) भोग्य- भोजक संबंध (ब)

31. प्रकाशन वर्ष के आधार पर मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं का निम्नलिखित में से कौनसे विकल्प में सही अनुक्रम है?
(अ) भारत-भारती, जयद्रथ वध, यशोधरा, साकेत
(ब) भारत-भारती, जयद्रथ वध, साकेत, यशोधरा
(स) जयद्रथ वध, भारत-भारती, साकेत, यशोधरा
(द) जयद्रथ वध, साकेत, यशोधरा, भारत-भारती

व्याख्या-(स) जयद्रथ वध - 1910 ई., भारत भारती-1912 ई., साकेत-1931 ई., यशोधरा-1933 ई.

32. रचना और रचनाकार की दृष्टि से कौनसा विकल्प सुमेलित नहीं है?
(अ) श्रावकाचार - देवसेन
(ब) स्थूलिभद्र रास - विजयसेन सूरि
(स) भरतेश्वर बाहुबली रास - शालिभद्र सूरि
(द) नेमिनाथ रास - सुमति गणि

व्याख्या-(ब) स्थूलिभद्ररास ग्रंथ की रचना जिनधर्म सूरि ने 1209 ई. में की थी।

33. इनमें से किस विद्वान ने आदिकालीन सिद्ध कवियों का संग्रह हिन्दी काव्य धारा नाम से किया?
(अ) महापंडित राहुल सांकृत्यायन
(ब) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(स) डॉ. प्रबोध चंद्र बागची
(द) महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री

व्याख्या-(अ) राहुल सांकृत्यायन ने आदिकालीन सिद्ध कवियों का काव्य संग्रह हिंदी काव्यधारा के नाम से प्रकाशित करवाया था।

34. ..... सभी ऐतिहासिक कहे जाने वाले काव्यों के समान इसमें भी इतिहास और कल्पना का- फैक्ट और फिक्शन का - मिश्रण है। सभी ऐतिहासिक मानी जाने वाली रचनाओं के समान इसमें भी काव्यगत और कथानक रूढ़ियों का सहारा लिया गया है। पृथ्वीराज रासो के बारे में यह कथन किसका है?
(अ) हजारी प्रसाद द्विवेदी
(ब) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
(स) रामचंद्र शुक्ल (द) रामकुमार वर्मा

व्याख्या-(अ) पृथ्वीराज रासो के बारे में उक्त कथन हजारी प्रसाद द्विवेदी का है।

35. कुलहि प्रकासै एक सुतु, नहिं अनेक सुत निन्द।
एक चन्द सब तम हरै, नहिं उडगन के वृंद ।।
काव्य-पक्तियों में अलंकार है-